

१२

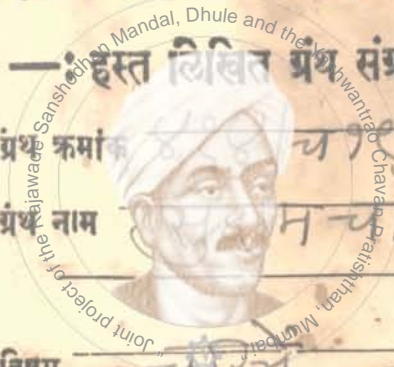
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्रमांक ४५५ चरित्र (७५५)

ग्रंथ नाम चरित्र

विषय चरित्र



॥ तिली पति सदा मजी की मला ॥

॥ न का हो स्मरुं सांग ते ह छ जीला

॥ तुहा लान से के नाम हे धारजी णे ५

॥ किती री कउं नाय का को ण जी णे ५

॥ ९ ॥ स्त्री ये सी स्र णे ह छ हो मित्र

॥ मां सा ॥ बरे जा णे तं पांग फे जी ल त सा

॥ गुरु दक्षी पा पुत्र दो लं न याने ॥ बची

॥ प्रा रिते को त चा ण र जे ण ॥ १० ॥ प्रता

॥ पी पा हा ह छ सा सा क सा हे ॥ अ हं का

॥ रू या पा प का जि न सा हे ॥ अ से ल धु

॥ मी सा रि खी ज्यां सरा मा ॥ उ णे का य अ

॥ लां श्री ये सांग आ ला ॥ ११ ॥ वाली ॥

॥ बोल ता अ से निल्यं मुं दि री ॥ वा ट ते म

॥ ला मि थ्य अं त री ॥ का स या म ला मि थ्य

॥ सां ग ता ॥ मि त्र थो र की अ र्थ दा वि

॥ ता ॥ १२ ॥ स वा ई ५ क रि ता उ प वा

॥ त म ला ध री हो ५ क थि ता ब डि वार

॥ केसा तु ह्री हो ॥ मज वक्र न से आ ॥

॥ हे अपदा ॥ कितिसा गतसा हरिची

॥ संपदा ॥ १३ ॥ जरिमित्र जसे हरिहा

॥ तमचा ॥ तरिभोग कसान सुटे अ

॥ मुचा ॥ किविले दिसती बहु वाळ

॥ मुले ॥ हरिभे दिसजा मज हे सुच

॥ ले ॥ १४ ॥ चाली ॥ रिक्त पाणिकाय

॥ जाउं सांग सांग सुंदरी ॥ लछ जी

॥ सकायने उं बोलवी धृतेो करी ॥

॥ जरिपदे चि विबने हं रिस शुद्ध्या

॥ वया ॥ तरी तनात वांटे श्लाघ्य

॥ तेथ जावया ॥ १५ ॥ लागला बहुत

॥ त हेत जावया सि अंतरी ॥ कंद मूळ प

॥ त्रपुष्प कां हि पा हे अंतरी ॥ लणे च

॥ रात अस्ति नास्ति सर्व ठा उकी असे ॥

॥ कसे ह बुच प्रसतां प्रपंच पांतसा

॥ दिस ॥ १६ ॥ लछ जी सन्या वया

॥ पृथु असूनि ठे विले ॥ तरी तु ह्यास

(3)

॥ कासयासभेदिरीतिहाविते ॥ म
॥ लातुह्नापरिसथोरंधीला
॥ गलाअसे ॥ परंतुकायमीकस्तं
॥ घरातअर्थहानसे ॥ १७ ॥ श्लोक ॥
॥ ह्मणेउसणेआणितेंमेळउनी ॥ क
॥ रावेबिजेशीघ्रअतापतीनी ॥ पृथू
॥ पाहतातीनंमुष्टीमिळाले ॥ पती
॥ च्याकरीशिघ्रआणुनदीले ॥ १८ ॥
॥ पृथूदेवताहर्षसातोसुहमा ॥
॥ ह्मणेजागिजथोरहालाभअ
॥ ह्मो ॥ परीत्यासिबांधावयास्त्रि
॥ वस्त्रकेसे ॥ गळोलागलेफाटके
॥ जीर्णऐसे ॥ १९ ॥ मुहुर्तेजसाचा
॥ लिलाकृष्णभेटी ॥ तसादेखिला
॥ येकलाशुद्धजेटी ॥ पुढेपाहताभ
॥ व्यसेविप्रदोषे ॥ त्वरेचालीलेउ
॥ जवेकाकतीघे ॥ २० ॥ पुढेपाह
॥ तासुंदरीयेकनारी ॥ कउलेककुंस

॥ जिरकं भसिरि ॥ जलगा आ जिते बो लते व ॥
 ॥ लकतेः प्रणे माग सिते चिदे इ न तू ते ॥ २१ ॥
 ॥ चार लडे ॥ पाहालां पुढे धे नू भट् लीः नाम ह ॥
 ॥ स्तके हरिण चा लिकी ॥ पाडु से स वे ती ने ॥
 ॥ शो भ तिः पाष चा लिका वाम गोग ति ॥ २२ ॥
 ॥ श्लोक ॥ जसे सत्य हि उत्तम प्र श्र जालेः ॥
 ॥ मुळ हारि पुढे व्याप के पाठ विले ॥ गमे मान ॥
 ॥ सी थोर सा ला भ दी से ॥ हरी चिंत ने दार के ॥
 ॥ चा लिला से ॥ २३ ॥ जसी देखि ली दार का ॥
 ॥ कांच ना ची ॥ त सी फोर ली वृ ती भ भ वें ॥
 ॥ म ना ची ॥ हलणे ये क उ भा ग्य ह्या रु छ ॥
 ॥ राजा ॥ ति ये रू मी को ण सा पा ॥
 ॥ उ मा सा ॥ २४ ॥ चा ली ॥ वोळ रवी जरी ॥
 ॥ ना ध री हरी ॥ बु डि जे त री श्लोक सा गरी ॥
 ॥ ये क पा य तो टा कि ता पुढे ॥ पा व ला प ॥
 ॥ ही वृ ती ना तु डे ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ १३ मे ॥
 ॥ पा व ला दार का दार दे री ॥ पु सो ला ॥
 ॥ ग ले ख ग्रा नि चे दार वा सी ॥ अ सां को ॥
 ॥ ण को ठ नि आ ले ति लू ली ॥ ह लणे रु ॥
 ॥ छ जी चे असो बंधु आ ली ॥ २६ ॥



Joint project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(5)

॥ मास्यामाथावरिहातः स्वयेजाळा
 ॥ प्र स्वप्नामाक्षी ॥ पचातेथुनियास्फुटि
 ॥ तुकोवाने दिक्हीः थरदीवसिकेकी
 ॥ कथादीनेः २१ ॥ स्वरताळज्ञाननकु
 ॥ मरुकेः कथाकवतुकेकरविलीः ६० ॥
 ॥ मगप्या ॥ व्यथाजेजेहोतीः तेतेसर्वगेल
 ॥ प्रचितवडउमाक्षीमज ॥ ६१ ॥ मगप्या
 ॥ सोडीकीकोकि काचिकोजः रितरासी
 ॥ काजकामादे ॥ ६२ ॥ प्रायणलण
 ॥ तीयासेकायजेतेः काहिसं
 ॥ चरे मह ॥ ६३ ॥ बापापा
 ॥ सीद्वेषसागतीगा हाणेः तुम
 ॥ च्यापुत्रानेबुडविले ॥ ६४ ॥ का
 ॥ जपेते अह्लावे दिक् अमचाः पु
 ॥ नहातुमचा लणानिया ६५ ॥
 ॥ नाचतोबाजारीः याससि साकराः येउ
 ॥ नकाधराः इउतुलि ॥ ६६ ॥ भनल्यासो
 ॥ करितो नमनः देतो आलिंगनलघ
 ॥ वणो ॥ ६७ ॥ औसे औकिलेः ब्राह्म
 ॥ णाः या मुरेव अंत्यतत्यादुःखेः कधि



॥ ७३ ॥ ६८ ॥ जो लोको कष्टो नोः क्रोधेन
॥ अर्थरूपः कैसा पाप रूपः पोटा अला ॥
॥ ६९ ॥ मांसी पठ विठ्ठेः सर्व शिक वि
॥ लैः वथा वाया गेले काय कर ॥ ७० ॥ क
॥ हाचे सार्थकः मास्या जाळे नाही ल
॥ णउ निदेहीः कष्टि जाळे ॥ ७१ ॥
॥ सांडी करुनीयां वेगळे घातले ॥
॥ अन्न वस्त्र ही लें थोडे बहु ॥ ७२ ॥
॥ संतास करी तीगां की प्रदामाचे ॥
॥ अर्भक आमचे वडे केले ॥ ७३ ॥
॥ वाळीत घातले कोणी बोलीय
॥ ले ॥ मजपता आले केसे आ
॥ तां ॥ ७४ ॥ आवस्य ह्मणोनी
॥ अज्ञाम्यां दिधती ॥ उत्कीलो
॥ खुंटली ब्राह्मणाची ॥ ७५ ॥
॥ सांभाळाय आले हरीभक्त को
॥ णी ॥ देखीले हरोनी हीन वाणे
॥ ७६ ॥ चिंतानका करुं आसि

॥ कीर्तनेती ॥ ^(a) धनधान्य येती आपे
॥ आप ॥ ७७ ॥ आसीर्दियांचा
॥ मानीला विश्वासे ॥ जीवश्वासे
॥ श्वासे दाटलासे ॥ ७८ ॥ ईश्वरा
॥ ची माया कोणाही कळेना ॥ प्रेषी
॥ लेसदना पत्रपंती ॥ ७९ ॥ नारा
॥ यणेदी लहा बहोती मोकासा ॥
॥ जाला ते भवसा जगह देव ॥ ८० ॥
॥ इच्छा जाली तिला नसुही असा
॥ वें ॥ स्थळ दी लक्ष वेत आं पासी
॥ ८१ ॥ काष्टे तो उावी ना संकल्प म्यां
॥ केला ॥ देवे सिद्धीने लापण मासा
॥ ८२ ॥ की हीरखाणा की एसी जाली
॥ कां छा ॥ देवे ती ही इच्छा पूरवीली ॥
॥ ८३ ॥ पूजा की सी वाटे महावीरु मू
॥ ती ॥ देवे आवची ती ते ही दिली ॥
॥ ८४ ॥ विस्तीर्ण असा वे स्थळ कथे

(४)

॥ सा टी ॥ देवानेशेवती पूर्णदिल्ले ॥
॥ ८५ ॥ अग्नीहोत्रध्यावेस्मात्तग्नीस
॥ हीते ॥ देवाने साहीत्य घडवीले ॥ ८६ ॥
॥ करात्रीसी वाटे खये देवस्तुती ॥ देवे
॥ दीली सुर्ती कवित्वाची ॥ ८७ ॥ जो
॥ जो हेतमाश्या मनामाजी येतो ॥
॥ तो तो प्रवीतो स्वामी माझा ॥ ८८ ॥
॥ कोटेही अंतरपडो नैदीकाही ॥ सं
॥ साराची नाही मज विंता ॥ ८९ ॥
॥ माझा अंगिका पूर्ण देवकेला ॥
॥ अनुभव आला अंतरासी ॥ ९० ॥ मा
॥ गेपुढे देवमज सांभावी तो ॥ बाळा
॥ ते पाळी तो मायबाप ॥ ९१ ॥ अतां
॥ वणवण करुं काशा साटी ॥ हृदय
॥ संपुष्टी अला देव ॥ ९२ ॥ माझा योग
॥ क्षेमचालवी तो देव ॥ त्यासी अहं
॥ भावपूर्ण माझा ॥ ९३ ॥ त्याने उणे

॥ काही केले नाही मज ॥ इच्छीले सह

॥ ज पावतो मी ॥ १४ ॥ स्नान संध्या मा

॥ स्त्री नित्य चालवीती ॥ कथा करवी

॥ तो अहोरात्री ॥ १५ ॥ जाउने ही कोठे

॥ अपल्या वेगळे ॥ न धरी नी राळे बा

॥ व कासी ॥ १६ ॥ संकटाचा काही ये

॥ वीने ही वारा ॥ बोरी तो पश्चिमा रचामी

॥ साझा ॥ १७ ॥ होणा रानारी रवी करी

॥ तो सूचना ॥ सातवी तो दीना होई जा

॥ गा ॥ १८ ॥ कर्तव्यकार अठउरवा

॥ मीचे ॥ सर्वे खेळ्याचे अगणीत ॥ १९

॥ अनंत ब्रह्मांडे व्यापूनी भरला ॥ पु

॥ रोनी उरला नी राळाची ॥ १०० ॥ इच्छा

॥ वीना काडी पान हीन हा ले ॥ जगचा

॥ ले बोले सत्तात्याची ॥ १०१ ॥ हनी मृ

॥ त्यला भउस्य ती प्रजय ॥ स्थी ती स

॥ मृदाय कर्तितोची ॥ २ ॥ याचा पारव

॥ णी ऐसा जे हे कोण ॥ २ ॥ शोषा ही संपू

॥ षष्ठे वर्षे च ॥ ३ ॥ वेदनेतिनेतिरत्तवी
 ॥ ताशिणले ॥ तरेलराहीले अधोमुखे
 ॥ ४ ॥ ब्रह्मादीक अंत पाहता भागले ॥
 ॥ साधकशीणले ठाई ठाई ॥ ५ ॥ तोची
 ॥ रुपाकरी जरी दीनावरी ॥ भुक्ती मुक्ती
 ॥ च्यारी दासी होती ॥ ६ ॥ वर्म जाहे थोडे
 ॥ स्वामीचे अईका ॥ भक्ती बनावे येका
 ॥ वश्य होतो ॥ ७ ॥ कलयुगामा जीवर्णा
 ॥ श्रमधर्म करनी सकर्म अचरावे ॥
 ॥ ८ ॥ असे प्रेरणी या कथा करवी तो
 ॥ नित्यचालवी तो न साविधु ॥ ९ ॥
 ॥ पुढील प्रसंग जाणनारायण ॥ अ
 ॥ वस्थेचा प्रश्न रेसा आहे ॥ १० ॥ पृष्ठे
 ॥ चे उत्तरवदवी तो देव ॥ बोलें अनुभ
 ॥ वक चेश्वर ॥ ११ ॥ इति आदिकथानु
 ॥ संधान अवस्था प्रश्नसंपूर्ण मस्तु ॥



①

॥ श्रीरामलक्ष्मणनमः ॥

॥ गोरीनेदना विघ्ननाशना ॥ पावरे

॥ स्वरेअपल्यादीना ॥ प्रार्थीतोबहु

॥ दासअदरे ॥ साह्यताकरीअप

॥ ल्याकरे ॥ १ ॥ शगरेहेतुलागाह

॥ तौमनी ॥ रूपदेखितेभवआस

॥ नी ॥ प्रेरणाकरिशीघ्रअंतरी ॥

॥ ध्यासलागलानीजमंदिरी ॥ २ ॥

॥ पावसदुरुलोकलागली ॥ बाळ

॥ कासदेशारनाली ॥ आसपूर

॥ वीशीघ्रलाकरी ॥ चालवीकथा

॥ भागआदरी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ स्वये

॥ बोलीलाव्यासजन्मेजयासी ॥ ह

॥ रीचीअसेभक्तिभावेंजयासी ॥

॥ तयालागिरेन्यूनताकायआहे ॥

॥ करीतोहरीपूर्णतासर्वपाहे ॥ ४ ॥

॥ सुहामादरिद्रेवहूपिडितासे ॥ कु

॥ टुंबी गृहामाजीतोवैसतासे ॥ गृ

॥ हाचिरितीवर्णितावर्णवेना ॥ कुठ

॥ उपमाद्यावयापूरवेना ॥ पुध

॥ सापांचवासेअसेयेकआठ ॥ अ

॥ सावीतिथेकासयाचीकवाडे ॥

॥ सिरउछपाउसवारभसरा ॥

॥ तिळातुल्कीनाहितेयेनिवारा ॥

॥ ६ ॥ अनाहीरहासाजिर्याअन्न

॥ नाही ॥ मुलेनाजसपीडिलीकारुदे

॥ ही ॥ सप्रस्तामिकोनीअसेयेकव

॥ स्त्र ॥ कदाहीनसेखनित्यापाकपात्र

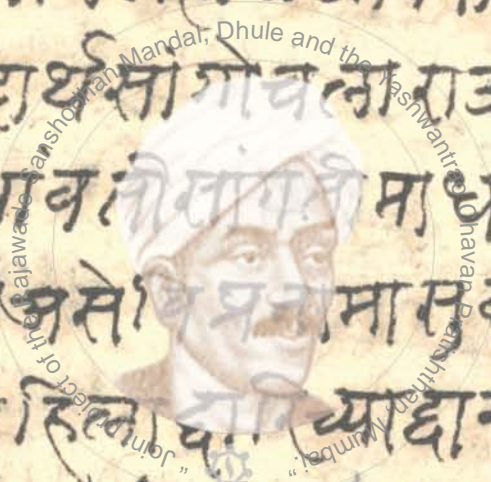
॥ ७ ॥ असाविप्रतोपीडितासेदरिद्रा ॥

॥ परीअंतरीआठवीयादवेद्रा ॥ सदा

॥ सर्वदाध्यानत्याहृच्छजीचे ॥ स्मरेमा

॥ नरीनित्यतानामत्याचे ॥ ८ ॥ तवंबो

॥ अरे आरुका नाम मासे सुदामां ॥
 ॥ बराजाण तो कछ जी पूर्ण आसां ॥
 ॥ त्वरे जाण वारा उळा माते मासां ॥
 ॥ नकारे करुं हेळना बुद्धि दूजी ॥ २७ ॥
 ॥ असे एकतां हांसिलेदार पाळ ॥
 ॥ वदोंता गले कछ जीचेक पाळ ॥
 ॥ विनोदार्थ सांगोचला राउळाले ॥
 ॥ त्वरे धावतो सांगतो साध्या ते ॥ २८ ॥
 ॥ दरिद्री असे विप्रनामा सुदामा ॥
 ॥ उभारा हिले दार व्यादारधामा ॥
 ॥ असे एकतां धाविले दिनबंध ॥
 ॥ त्वरे शीघ्र आळंगिला विप्रबंध ॥ २९ ॥
 ॥ प्रेमाचि गतिदा विती निवविती स्ने ॥
 ॥ हे सुती ११ ग विती ॥ भेदा भेद रिती ॥
 ॥ सुखे विसरती बाष्पां बुधिधारि ॥
 ॥ ती ॥ पाहाती सुमती त्यज निकुम ॥
 ॥ ती देखो निते वासती ॥ दोघाची ॥



॥ स्थितिवा नितो सुर नितो साधु मनी

॥ मानिती ॥ ३० ॥ वैसले सुखे प्रेमना

॥ वरे ॥ बाष्पयुक्तते नीरवा वरे ॥ रोम

॥ ठाकले दाटले मनी ॥ लागले करुं सु

॥ तिला गुनी ॥ ३१ ॥ चाळि तिनाळी ॥

॥ श्री हरी करुणा करी भव सा गरी म

॥ ज उद्धरी ॥ आवरी दट सावरी शि

॥ र अंतरी दिन मंदिरी ॥ लो करी तनु

॥ खो करी अरि सो करी जिव हो करी ॥

॥ या परी जिरि वपनी व उद्धरी शिव

॥ हा करी ॥ ३२ ॥ अरती ॥ अरती

॥ द्विज देवा तु शि कारुणा रो वा ॥ हे द

॥ शा पाबलो मी म नि सू टला हे वा ॥ ३०

॥ विप्र तं गुरु मूर्ती तु स्या उद्धरी श्रती ॥

॥ पावती संतोषतो काय वर्णु मी की ती ॥

॥ १ ॥ चरणी सर्व तीर्थे मज छ उती अर्ते ॥

॥ पापताप दैन्य से ले ॥ भावे योजली

॥ माते ॥ २ ॥ धन्य मी अजिना लो तु स्या

॥ दर्शने न्हा लो ॥ पावलो ब्रह्म पद पृ

(15)

श्रीगणेशाय नमः

॥र्णानंदमीधातो ॥ ३ ॥ महिमावर्णि

॥कोणजेथ ब्रह्म तं पूर्ण ॥ कवेश्वरदि

॥ नरंकभावे वर्णितो गुण ॥ ४ ॥ ४४

॥श्लोक ॥ परस्परेते स्तुती वाढ वीती

॥ परस्परेते गती आठ वीती ॥ परस्प

॥ रेते मिळनी मिळाले ॥ एणारितीने

॥ सद्नासि जाळे ॥ ३ ॥ चाली ॥ अ

॥ रत्या बहू घेउनी करी ॥ घात त्या व

॥ रक्त सुंदरी गळी किमणी पुढे मु

॥ व्यनायक ॥ भारती करी दीजव

॥ रिका ॥ ३४ ॥ पाय धूत ले तीर्थ घे

॥ तले ॥ शेष उरले नी रचे दिले ॥ का

॥ पिले तया स्नेह आदरे ॥ लोक पाह

॥ ती सर्व सादरे ॥ ३५ ॥ वाजती ब्रह्म

॥ दोल दुंदुभी ॥ ने रियातुरे गजती

॥ नभी ॥ हर्ष वाटला कळ अंतरी ॥ पं

॥ वित मांडित्सार ल मंदिनी ॥ ३६ ॥

॥ श्लोक ॥ पकान्ने बहु वा ढिली रा

॥ उरसे शाखा बहु तापरी पानना

॥ पापउसां उयाले खुवउे मांउे पु

॥ आभीतरी ॥ सां वारी बहु काधि

॥ काठी करि च्या मिथ्या कुटे लोण

॥ वी ॥ बेले को मळ अम्रती क्षण मि

॥ रची ना ही कदा वाणिची ॥ ३७५ सा

॥ श्री शुभ्र सुवासि वाहन बरे पीते

॥ वरान्ने बरी धक्षीरी मालति वाटवे

॥ चग हुंले शि प्राचने कापरी पची

॥ णी साखर पांठरी मख दुमीते

॥ सीच ना बद ही प अंब्याचे रस पी

॥ वळे शिखरणी नानाम धराव

॥ ही ॥ ३८ ॥ दुग्धे गौरी अजामरा

॥ महिषिची नीरी चतसे की ती पस

॥ चरुस मघते तथान वनिते थिज

॥ ली बहु लारिती ॥ साई लाम धुरा

॥ अनेकरिति च्यात केंद ह्यें सुंद
 ॥ रे ॥ वाढी ऋक्मिणिरत्नता टिनिकु
 ॥ रे वाट्या भरी आदरे ॥ ३९ ॥ स्वयें
 ॥ वीजणे वारिती कच्छ नारी ॥ करी
 ॥ प्रार्थना फार मुखे मुरारी ॥ अशा
 ॥ यारिती सारिले भोजना ते ॥ बसो
 ॥ घातले उत्तमा ते ॥ ४० ॥ चाली ॥
 ॥ बोहिनी सुखी श्रीहरी पुसे ॥ काय
 ॥ संतती संपती ॥ योगक्षेम
 ॥ हाचाले लोक सु ॥ कायले तसा
 ॥ कायखातसा ॥ ४१ ॥ येरुवो
 ॥ तिला एक श्रीहरी ॥ काळ तीन ही
 ॥ नांदती घरी ॥ संतती बह फार
 ॥ सीअसे ॥ संपती कदाच निनादि
 ॥ से ॥ ४२ ॥ सर्वही सुखी वाळ के मुळे
 ॥ स्नेह हा तुझा याचि रे मुळे ॥ काळ क

॥ मिती तूज ध्यासिती ॥ तूज वेग के
 ॥ ननेणती ॥ ४३ ॥ श्लोक ॥ विउदी
 ॥ धले कर्पुरे जाल वंगा ॥ अनंताप
 ॥ रीचचिले चंद्रांगा ॥ सुवासी बहू
 ॥ चचिली सर्वतेलें ॥ करे अपुसा
 ॥ मर्दिती चांपियेते ॥ ४४ ॥ अजंज
 ॥ रदीले हिरेरनजाती ॥ दिले अंशुके
 ॥ सर्वलोके पाहाती ॥ श्रमात्तर होता व
 ॥ हविप्रदेही ॥ निवाले सुरवे आदरेक
 ॥ छगेही ॥ ४५ ॥ सुने बाळली का बहू
 ॥ आठवीती ॥ खुणायेक मे का मुखेजा
 ॥ णवीती ॥ वदोला गलेले पूर्वते उज्जनी
 ॥ चे ॥ बहू आठवे गुह्यत्या अंतरीचे ॥ ४६
 ॥ चाली ॥ रुख बोलिली आठवे मला ॥
 ॥ उज्जनी मधे रवेळ वर्तला ॥ गुरुमाते
 ॥ नेधाडिले वना ॥ आठवे बहू माझीया



॥ मना ॥ ४७ ॥ पाउसातं रे फारणी जले
 ॥ वायुसंकटे थोर कष्ट लों ॥ धोत्रत्वांत ध
 ॥ मस्तकावरी ॥ धरीलै असे माझीया शि
 ॥ रीं ॥ ४८ ॥ श्लोक ॥ काषाच्या गुरुकाव
 ॥ डी धरुनियां होतो वडा रवा लते ॥ वाबा
 ॥ पाउस घेतला वटतळी मोठी अवस्था
 ॥ चते ॥ तैलाते लघुधोत्रे मजवरी घाल
 ॥ निया वारिले ॥ कासेला उनिया काव
 ॥ डी मजतुवां क्षिप्रे मधे तारिले ॥ ४९ ॥
 ॥ चाली ॥ लागली मला भूवरे जसी ॥
 ॥ घेतली तुका वडी तसी ॥ आठउंकी
 ॥ ती कायरे तुसे ॥ नाहिदा विलें त्या कधा
 ॥ दुजे ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ सुदामा ह्मणे तुं भ
 ॥ ला आठवीसी ॥ बहूतारिती बोलुं
 ॥ मोरवीसी ॥ परीरे तुला राज्याकां प्राप्त
 ॥ लें ॥ मला रेकसे दैन्यधावो निआले ॥ ५१ ॥
 ॥ विचारी मनी श्रीहरी गुह्य ऐसें ॥ दिल्यावां
 ॥ चुनी पाविजे सांग कैसे ॥ ५२ ॥ परी वेद पुणे
 ॥ मला पावलासी ॥ श्रुतीच्या नियोगे सरव्या
 ॥ शेटलासी ॥ कदां जाह्मणाला गिकाहीन

॥ कदा पुण्य काह कोठे नकेलें ॥ कदा
 ॥ र्थ यात्रा कधी नाहिकेली ॥ कदा ही कदा था
 ॥ स्व मिही नारकी ॥ ५३ ॥ नसे देह हा लाविला
 ॥ उपकारा ॥ नसे भक्ति चाला गलेश वारा ॥ न
 ॥ से आदरे साधु सन्मान केला ॥ नसे वस्ति सी
 ॥ ब्राह्मणाठावदीला ॥ ५४ ॥ चाली ॥ पूर्व पूण्य
 ॥ पाहतां चकाहिले शानादिसे ॥ वीहिनीने म
 ॥ तुक्यासकाय धाडिलें असे ॥ सद्गदी त
 ॥ लासुदामदेव अंतरी ॥ तूज योग्य कायसा
 ॥ गपाठ वील अंतुरी ॥ ५५ ॥ मला धडिलें अ
 ॥ सेल तेचि देइतों करी ॥ ह्मणा निती त्रसो व
 ॥ लाकरे करुनि श्री हरी ॥ पाहतां चिदे विले
 ॥ पृथूं कवा सिला गले ॥ येक मुष्टि आदरे
 ॥ मुखात घातें लेगी ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ दुर्जी
 ॥ मुष्टिते ठे विली कं छे जीने ॥ हिवोनी करे घे
 ॥ तली क्कनिणीने ॥ प्रसादार्थतीने दिल्ली गो
 ॥ पिकासी ॥ स्वये भक्षिले आदरे आवडीसी
 ॥ ५७ ॥ हरीने दिल्ला शीघ्र ठे कर भावे ॥ तवे
 ॥ पातला विश्वकर्मा स्वभावे ॥ जसी द्वार काठ
 ॥ नवीली बरीरे ॥ तसी शीघ्र सुदामपुत्री करी
 ॥ रे ॥ ५८ ॥ खुणा उ नितो प्रेषिला विश्वकर्मा
 ॥ हरीची रूपा पावला पूर्णवर्मा ॥ धने धान्या



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com